

“मीठे बच्चे - इस समय तुम्हें निराकारी मत मिल रही है, गीता शास्त्र निराकारी मत का शास्त्र है, साकारी मत का नहीं, यह बात सिद्ध करो”

प्रश्न:- कौन सी गुह्य बात बड़ी युक्ति से फर्स्टक्लास बच्चे ही समझा सकते हैं?

उत्तर:- यह ब्रह्मा ही श्रीकृष्ण बनते हैं। ब्रह्मा को प्रजापिता कहेंगे श्रीकृष्ण को नहीं। निराकार भगवान ने ब्रह्मा मुख से ब्राह्मण रचे हैं। श्रीकृष्ण तो छोटा बच्चा है। गीता का भगवान निराकार परमात्मा है। कृष्ण की आत्मा ने पुरुषार्थ करके यह प्रालब्ध पाई। यह बहुत गुह्य बात है – जो फर्स्टक्लास बच्चे ही युक्ति से समझा सकते हैं। 20 नाखून का जोर देकर यह बात सिद्ध करो तब सर्विस की सफलता होगी।

गीत:- कौन आया मेरे मन के द्वारे...

ओम् शान्ति। बच्चों ने सुना यह आंख नहीं जान सकती है, किसको? भगवान को। यह आंखे श्रीकृष्ण को तो जान सकती हैं। बाकी भगवान को नहीं जान सकती। आत्मा ही परमात्मा को जान सकती है। आत्मा मानती है कि हमारा परमपिता परमात्मा निराकार है। निराकार होने कारण, इन आंखों से न देखने कारण इतनी याद नहीं ठहरती। यह निराकार बाप निराकारी बच्चों (आत्माओं) को कहते हैं। तुमको निराकारी मत मिलती है। गीता शास्त्र है ही निराकारी मत का। साकारी मत का नहीं है। गीता धर्मशास्त्र है ना। इस्लामियों आदि का भी धर्म शास्त्र है। इब्राहिम ने उच्चार, बुद्ध ने, क्राइस्ट ने उच्चार। उन्हीं के तो चित्र हैं। गीता जो सर्व शास्त्रमई शिरोमणी है, उसके लिए मनुष्यों ने श्रीकृष्ण का चित्र दिखा दिया है। परन्तु बाप समझाते हैं यह रांग है। गीता मैंने उच्चारी, मैंने राजयोग सिखलाया और स्वर्ग की स्थापना की है। मैं हूँ निराकार परमपिता परमात्मा। मैं तुम सर्व आत्माओं का बाप मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ। मुझे ही वृक्षपति कहा जाता है। श्रीकृष्ण को वृक्षपति नहीं कहेंगे। परमपिता परमात्मा ही मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, क्रियेटर है। कृष्ण को क्रियेटर नहीं कहेंगे। वह तो सिर्फ दैवी गुण वाला मनुष्य है। कृष्ण को भगवान कहने से मनुष्य मूँझ पड़ते हैं। भगवान है एक। कृष्ण को कोई सभी का परमात्मा नहीं कह सकते। बाप कहते हैं मैं 5 हजार वर्ष के बाद कल्प के संगम पर आता हूँ। मैं सारे सृष्टि का बाप हूँ, मुझे ही गॉड फादर कहते हैं। कृष्ण का नाम देने से परमपिता परमात्मा को जान नहीं सकते। यही बड़ी भारी भूल कर दी है। गीता द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म मैंने ही स्थापन किया है। मुझे शिव वा रूद्र भगवान कहा जाता है और कोई भी सूक्ष्म देवता को वा मनुष्य को भगवान नहीं कहा जाता। लक्ष्मी-नारायण आदि कोई को भी परमात्मा नहीं कहा जाता है। कहा जाता है परमात्मा एक है। भगवानुवाच भी है तो जरूर भगवान आया होगा और आकरके राजयोग सिखाया है। बाप कहते हैं कल्प पहले भी मैंने तुम बच्चों को कहा था। कृष्ण कभी भी बच्चे-बच्चे नहीं कह सकते। परमपिता परमात्मा ही सबको बच्चे कहते हैं। कल्प पहले भी मैंने तुम बच्चों को कहा था कि देही-अभिमानि बनों, मुझ निराकार को अपना बाप भगवान समझो। साकारी बाप प्रजापिता ब्रह्मा ठहरा क्योंकि ब्रह्मा द्वारा ही भगवान ने ब्राह्मण ब्राह्मणियां रचे हैं। श्रीकृष्ण प्रजापिता नहीं है। भगवान कहते हैं मैं ब्रह्मा मुख द्वारा ब्राह्मण ब्राह्मणियां रचता हूँ। कृष्ण ऐसे कह भी न सके। ब्रह्मा बड़ा है, कृष्ण छोटा बच्चा है। ब्रह्मा ही कृष्ण बनता है। यह कितनी गुह्य बात है। यह समझाने में बड़ी युक्ति चाहिए। फर्स्टक्लास बच्चियां ही समझा सकेंगी। बाप कहते हैं बहुत अच्छा बच्चा वा बच्ची हो जो सिद्ध करे कि गीता का भगवान निराकार परमात्मा है। जिसने गीता रची उसने ही बच्चों को राजयोग सिखाया और स्वर्ग रचा। जरूर ऊंचे ते ऊंचा बाप ही राजयोग सिखायेगा। श्रीकृष्ण ने तो प्रालब्ध पाई है। प्रालब्ध देने वाला है परमपिता परमात्मा। कृष्ण है उनका बच्चा। कृष्ण की आत्मा ने पुरुषार्थ किया और प्रालब्ध पाई। पुरुषार्थ कराने वाले को उड़ाकर, पुरुषार्थ कर प्रालब्ध पाने वाले का नाम रख गीता को खण्डन कर दिया है। एक गीता को झूठा करने से सभी झूठे हो गये हैं, तब कहते हैं झूठी माया झूठी काया...

सर्विस को बढ़ाने के लिए बच्चों को 20 नाखून का जोर देना चाहिए। गीता किसने उच्चारी? गीता द्वारा कौन सा धर्म किसने स्थापन किया? इस ही बात से तुम अच्छी रीति जीत पहन सकते हो। परमपिता परमात्मा द्वारा स्वर्ग के

सर्विस को बढ़ाने के लिए बच्चों को 20 नाखून का जोर देना चाहिए। गीता किसने उच्चारि? गीता द्वारा कौन सा धर्म किसने स्थापन किया? इस ही बात से तुम अच्छी रीति जीत पहन सकते हो। परमपिता परमात्मा द्वारा स्वर्ग के मालिक बनते हैं, न कि कृष्ण द्वारा। तो इस बात पर मेहनत करनी है। सब शास्त्र हैं गीता के बच्चे। तो बच्चों से कभी वर्सा मिल नहीं सकता। वर्सा तो जरूर बाप ही देंगे। काका, चाचा, मामा, गुरु आदि कोई से भी वर्सा नहीं मिलता है। बेहद के बाप से ही बेहद का वर्सा मिलता है। यह लिखत ऐसी साफ कर लिखनी है कि समझ जायें तो बरोबर गीता खण्डन की है। गीता को डिफेम किया है, इसलिए भारत कंगाल बन गया है। कौड़ी तुल्य बन गया है। ऐसी लिखत लिखो। भारत को स्वर्ग बनाने वाला कौन है? स्वर्ग कहाँ है? कलियुग के बाद सतयुग होगा तो उनकी स्थापना जरूर संगम पर होनी चाहिए। शिव भगवानुवाच - मैं कल्प-कल्प संगम पर पावन दुनिया बनाने आता हूँ। ऐसे सिद्ध करो जो समझें कि शिव परमात्मा ही सबको दुःखों से लिबरेट करते हैं, न कि श्रीकृष्ण। गीता के भगवान को जो समझ जायेंगे वही आकर फूल चढ़ावेंगे। सभी नहीं चढ़ावेंगे, जो समझ गये वह फूल बन बलि चढ़ जायेंगे। बाबा को कोई फूल देते हैं तो बाबा कहते हैं मुझे ऐसे फूल (बच्चे) चाहिए। कांटे मेरे पर बलि चढ़ें तो मैं उनको फूल बनाऊँ। बबुलनाथ भी मेरा नाम है। बबुल के कांटों को फूल बनाने वाला मुझे ही कहते हैं, श्रीकृष्ण तो स्वयं फूल है। वह है गार्डन ऑफ अल्लाह, यह है डेविल फारेस्ट। इनको फिर डीटी गार्डन बाप बनाता है। तुम ही नई दुनिया के मालिक बनते हो। लक्ष्मी-नारायण की डीटी डिनायस्ती कही गई है। ब्राह्मण कुल की डिनायस्ती नहीं कहेंगे। यह ब्राह्मण कुल है। परमपिता परमात्मा ने प्रजा रची है, इसलिए इनको प्रजापिता कहा जाता है। शिवबाबा को वा श्रीकृष्ण को प्रजापिता नहीं कहेंगे। यह तो कृष्ण पर कलंक लगाये हैं कि 16108 रानियां थी। यह तो प्रजापिता ब्रह्मा ने इतने बच्चे और बच्चियां पैदा की हैं।

ज्ञान का सागर है ही एक परमपिता परमात्मा। पाप का दण्ड धर्मराज देते हैं। प्रेजीडेन्ट को भी बड़े से बड़ा जज कसम देंगे। राजा से कभी कसम नहीं उठवाया जाता है क्योंकि उन्हें राजा बनाता है भगवान। वह है अल्पकाल के लिए। यहाँ तो बाप 21 जन्मों के लिए राज्य-भाग्य देते हैं। वहाँ कसम उठाने की बात नहीं है। यह मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष है, कोई जंगली वृक्ष नहीं है। परमपिता परमात्मा को वृक्षपति कहा जाता है। कृष्ण इस वृक्ष का राज नहीं बता सकते, वृक्षपति ही समझा सकते हैं। नर से नारायण तो बाप ही बनायेगा, न कि कृष्ण। मुख्य धर्म शास्त्र हैं 4, बाकी सब हैं दन्त कथायें। पहला-पहला धर्म कौन सा स्थापन हुआ और किसके द्वारा? स्वर्ग में था देवी-देवता धर्म, तो जरूर वह बाप ही रचेगा। बाप पुरानी दुनिया से लिबरेट करते हैं क्योंकि दुःख बहुत है। त्राहि-त्राहि करते हैं। बाप से स्वर्ग का वर्सा लेना है तो अभी लो। साधारण आदमी कोई वर्सा दे नहीं सकता। बच्चों को सर्व प्राप्ति कराने वाला है ही बाप। बेहद का बाप ही स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। ऐसी-ऐसी टैम्पटेशन देनी है। जैसे शिकारी लोग कोई से शिकार कराते हैं तो सारी तैयारी कर शिकार सामने लाकर सिर्फ उनसे शिकार कराते हैं। यहाँ शिकार कराना है माताओं से। बाप कहते हैं शिकार माताओं के आगे ले आना है। मातायें बहुत हैं। नाम एक का बाला हो जाता है। तुम शक्ति सेना हो। शक्ति डिनायस्ती नहीं कहेंगे। शक्ति सेना की मुख्य है जगदम्बा, काली, सरस्वती। बाकी चण्डिका आदि उल्टे नाम भी बहुत रख दिये हैं। तो तुम बच्चों को ऐसी बातों पर क्लीयर करना है कि ऊंचे ते ऊंचा भगवान फिर ब्रह्मा विष्णु शंकर। प्रजापिता ब्रह्मा की बेटी है सरस्वती। उनको गॉडेज ऑफ नॉलेज कहते हैं। तो जरूर उनके बच्चों को भी गॉडेज ऑफ नॉलेज कहेंगे। अन्त में विजय तो तुम्हारी होने वाली है। कोई-कोई गीता से वेदों का मान ज्यादा रखते हैं। तो भी गीता का प्रचार ज्यादा है। बाप कहते हैं मैं आता हूँ संगमयुग पर। कृष्ण का चित्र है ही सतयुग का। फिर 84 जन्मों में रूप बदलता जाता है। ज्ञानी तू आत्मा तब बन सकते हैं जब परमपिता परमात्मा आकर आत्मा का ज्ञान देवे। परमपिता परमात्मा है ज्ञान का सागर। उन द्वारा तुम ज्ञानी तू आत्मा बनते हो। बाकी सब हैं भक्त तू आत्मा। बाप कहते हैं मुझे ज्ञानी तू आत्मा प्रिय लगते हैं। महिमा सारी गीता की है। ध्यानी से ज्ञानी श्रेष्ठ हैं। ध्यान

होगा। सारी सूर्यवंशी राजधानी ने मेरे द्वारा ही प्रालब्ध पाई है। देलवाड़ा मन्दिर का कान्द्रास्ट भी ऐसे लिखो जो पढ़ने से ही मनुष्यों को झट तीर लग जाये। फार्म भी भराना है कि बेहद का बाप ज्ञान का सागर है, बहुत मीठा है, हमको राजयोग सिखलाता है। उस सतगुरु बिगर है घोर अन्धियारा। ऐसे बाप की महिमा करने से बुद्धि में लव आयेगा। बाप सम्मुख आकर जन्म दे तब तो लव होगा ना। तुमको जन्म दिया है तब तो लव हुआ है। बाप कहने से ही स्वर्ग याद आता है। बाबा स्वर्ग की स्थापना करते हैं। हम उनसे वर्सा ले रहे हैं। विश्वास करो या न करो। बेहद का बाप तो सभी का बाप है, उनसे जरूर स्वर्ग का वर्सा मिलेगा। कृष्ण से वर्सा मिल न सके। बाप है ही नई दुनिया का रचयिता। तो जरूर नई दुनिया का वर्सा देगा। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) बाप का प्रिय बनने के लिए बुद्धि में ज्ञान को धारण कर ज्ञानी तू आत्मा बनना है। बाप से योग लगाना है। ध्यान की आश नहीं रखनी है।
- 2) माताओं को आगे रख उनका नाम बढ़ाना है। अथॉरिटी से गीता के भगवान को सिद्ध करना है। 20 नाखून के जोर से सर्विस को बढ़ाना है।

वरदान:- समर्थ स्थिति के आसन पर बैठ व्यर्थ और समर्थ का निर्णय करने वाले स्मृति स्वरूप भव इस ज्ञान का इसेन्स है स्मृति स्वरूप बनना। हर कार्य करने के पहले इस वरदान द्वारा समर्थ स्थिति के आसन पर बैठ निर्णय करो कि यह व्यर्थ है वा समर्थ है फिर कर्म में आओ, कर्म करने के बाद फिर चेक करो कि कर्म का आदि, मध्य और अन्त तीनों काल समर्थ रहा? यह समर्थ स्थिति का आसन ही हंस आसन है, इसकी विशेषता ही निर्णय शक्ति है। निर्णय शक्ति द्वारा सदा ही मर्यादा पुरुषोत्तम स्थिति में आगे बढ़ते जायेंगे।

स्लोगन:- अनेक प्रकार के मानसिक रोगों को दूर भगाने का साधन है - साइलेन्स की शक्ति।